CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

सूर्यपुराण

गोस्वामीतुलसीदास कृत

बेनीराम बुकसेलर ने छपवाकर प्रकाशित किया।

Printed by G. P. Arora at the Kalpataru Press No. 9/42 Benares.

श्रीलक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर,
देवप्रयाग (गढ़वाल)
व्यवस्थापक-पं. चक्रधरजोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

॥ अथ सूर्य्य पुराण ॥

दो०—बन्दि कंज पद जोरिके, श्रीपति गौरि गणेश।
तुलसीदास कहते सुयश, बर्णों कथा दिनेश ॥
बन्दौ चरण हृदय धरि, प्रेम भक्ति मन लाई।
महिमा अगम अपार है, साहब ज्ञान सहाई ॥

ूर्य देवता सुमिरौं तोही । सुमिरत ज्ञान बुद्धि दे मोहीं
योति स्वरूपभानुबलवाना । तेज प्रताप अग्नि समाना
म आदित परमेश्वरस्वामी । अलख निरंजन अंतरजामी
रणिनजाइज्योतिकरलीला। धर्म धुरंधर परम सुशीला
योतिकला चहुंओर बिराजै । जगमगकानन कुण्डलछाजै
ल बरन हय असवारी । ज्ञान निधान धर्म ब्रतधारी
ु कथा मैं कहौं बखानी । पुरुषोत्तम आनन्द घनज्ञानी
ादितमहिमा अगमअपारा । तीनभुवनजेहिछबिउजियारा

दो—आदित कथा पुनीत अति, गावहिं शंभु सुजान।
तीनलोक छबि ज्योति मय, करौं प्रताप बखान ॥

नहु उमा आदित प्रतापा । बरनोबिमल सूर्य्यकर जापा
थमहातम सुनहु भवानी । कहौं पुनीतकथा शुभबानी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

बांझ सुनै एक मास पुराना । मनक्रमबचन धरैब्रत ध्याना
द्वादश वर्ष करै अतवारा । नेम धर्म एक मधुर अहारा
कुशा बिछाई करै बिश्रामा । हर्षित जपै सूर्य्य कर नामा
आदित बासर जबहीं आवै । सुनैपुराण अरु विप्रजिमावै
इतनाटेक धरै तिथ जबहीं । होहिदयालदया निधितबहीं
होहिंपांचसुतअग्नि समाना । धर्म धुरंधर ज्ञान निधाना
तिनसोजीतिसकैनहिं कोई । विद्यमान सुलक्षण होई

दो०—बांझ कथा मन लाइके, टेक धरै ब्रत ध्यान ।
निश्चै उपजे पांच सुत, जांधा अग्नि समान ॥

इति श्रीपद्मपुराणे गोस्वामी तुलसीदासजी कृत सूर्य माहात्म्य
बन्ध्या स्त्री पुत्र जननी नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

कथाकहौं रचि अमृत बानी । मनअस्थिर करसुनहुभवानी
कुष्ट बरण हो जाके अंगा । सुन मनुजसो भानु प्रसंगा
रविदिनभोजनकरै अलोना । पुष्प सुबास चढ़ावै दोना
बिप्र बोलि रवि होम करावै । सोई भस्म ल अंग लगावै
निश्चै कुष्ट बरन छय जाई । धनि महिमाहै सूर्य्य गोसाई

दो० – जाके कुष्ट शरीर में, सो नित सुनै पुरान ।
निश्चै सूर्य्य प्रताप ते, पावै काया दान ॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्य महात्म्य कुष्ट निवारणन्नामः ॥ २ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सूर्य्य कथामैं कहौं बखानी । मनसुतंत्र होइसुनहु भवानी
जाके बरण अंग महँ होई । सूरज कथा पाठकर सोई
कर पांच व्रत नर अतवारा । नेम धर्म एक मधुर अहारा
चन्दन अगर लेप तनकरई । निसदिन ध्यान सूर्यपरधरई
निश्चय अंग बरनमिटिजाई । धनि महिमा सूर्य गोसाई
भानु चरित्र सुनै मन लाई । निश्चै कुष्ट बरन क्षयजाई

दो० —जाके उपजे कुष्ट जो, सो नित सुनै पुराण ।
धनि महिमा आदित्य के, करौं प्रताप बखान ॥

सूर्य्य कथा मैं कहौं बुझाई । मनक्रमबचनसुनौ चितलाई
जोनर होई अंधयुग लोचन । सो यह कथा सुनेदुखमोचन
करै लोन बिनु एक अहारा । बिविधभांति करनेमअचारा
पीपर तरु तर सुनै पुराना । पावै लोचन अंध सुजाना
अंधा लोचन निश्चे पावै । जोयहकथा सुचितमनलावै

दो० —अंध लहै निश्चै नयन, जो जानै प्रभु एक ।
पुलकित परम पुनीत अति, धर कथा पर टेक ॥

इति श्री महापुराणे सूर्य माहात्म्ये अंध लोचन प्राप्तनाम ॥३॥

यात्रा जो नर करै बिदेशा । सोनित सुनै पुरान सुरेसा
निश्चैताइ सकल शुभ होई । लाभ भवन चलिआवै सोई
जोसंतितरहिऋणअधिकारी । सोयह कथा करै अनुसारी

श्रीलक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर,
देवप्रयाग (... हिमालय)
व्यवस्थापक पं. चक्रधरजोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

निश्चैअऋणीसकलमिटजाई । धनि महिमा है सूर्य गोसाई

दो०—यात्रा को नर जब चले, तब यह सुनै पुरान ।
निश्चै मन बांछित सकल, पुरवहिं श्रीभगवान ॥

इति श्री महापुराणे सूर्य माहात्म्ये मन बांछित दातानाम ॥

ऐसी महिमा आदित देवा । करहिं जासुसुरनर मुनिसेवा
सिरै गाढ निश्चै मन तासू । पुलक प्रेम मनहरष हुलासू
दीनानाथ निरंजन साई । महिमा जाकर बरनिन जाई
सूर्य कथा मैं कहौं बखानी । मनस्थिर करि सुनो भवानी
कर दंडवत अरु ब्रत ध्याना । सोनतुलै यह कथा समाना
तेज प्रताप बरनि नहिंजाई । सूर्य चरित्र सुनहु मनलाई
कहैं शंभुयह कथा पुनीता । रविप्रतापमैं भयों अजीता

दो०—जो महिमा आदित्य की, बरनो प्रेम उछाह ।
सुनहु उमा अति पुलकितन, कीरति प्रभु अवगाह ॥

कहौं पुनीत कथा शुभबानी । बहुरिमहातम सुनहुभवानी
कातिकचैतपुनीत दिनभारी । साजहिंअरघ सकलनरनारी
चंदन अगर कपूरकी बाती । पूजा भक्ति करेबहु भांति
मनोकामना जो मन राखे । पुलकित होई भानुगुनभाखै
तेहि कल्याण करै भगवाना । तेजपुंज प्रभु कृपा निधाना

दो०—लीला अगम अपार प्रभु, कृपासिन्धु भगवान ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

बरनो कथा पुनीत यह, मन अस्थिर करि ध्यान ॥

सुनहुउमा यह चरित अपारा । भानु महातम बहु बिस्तारा
सिंहल दीप नगर एकनाऊं । तहां निवास परिक्षित राऊ
तहां पुनीत धर्म नर नारी । तासू भवन एकसुताकुमारी
सो नित करै भानुकी पूजा । सेवे सूर्य और नहिं दूजा
श्रद्धा नेम कथा मन लाई । करै हर्ष सो शुभ दिनराई
तासु भवन प्रभु करै कलेशा । तीनलोक नहिं जानै भेवा
एकसमय अतिअचरजभयऊ । शुरसरतीर गमन तेहि ठयउ
चीर उतारि भूमि पर धरेउ । कन्या पगजल भीतरकरेऊ
मज्जन कर ' लागसो बाला । हिएबिराजत मोतिन माला
तेहि औसर नारदमुनिआये । कन्या देखि परम सुख पाये
ठाढ भये मुनि सुरसर तीरा । लीन्ह उठाय सुताकर चीरा
कन्या जलमें करै पुकारा । पट दीजै मुनि धर्म बिचारा
कहनारद सुनु कन्या बाता । मोसनकरहु पुरुषकर नाता
सुनुमुनि ज्ञानीभये तुमबौरा । ऐसेबचन कहौ जनि औरा
असबानीकसलहेउ मुनीसा । हमसन कन्या लाखपचीसा
बिनती और सुनहुममबानी । देउबसन तुममुनि बिज्ञानी

दो०—नगन्नारि जलमहँ खड़ी, कह मुनिसन करजोर ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कृपा सिन्धु ज्ञाता धरम अम्बर दीज मोर ।

देवकन्या बहु बिनती लाई । तेहिक्षण नारद रहे लजाई
अम्बरदे मुनिभवन सिधाए । तहँ तबही श्री शंकर आये
जोमुनिमुनिहिंशापबसकीन्हा। सो आदित सोकहबे लीन्हा
जहँमैं करत रही असनाना । अम्बरलै गये मुनि बिज्ञाना
ताही लय शिवतहां सिधारे । गौरवबदनसंग गिरिजाधारे
शक्ति सहित प्रभुनाये माथा । हर्षि शंभु देखि मुनि नाथा
कुशलकहीमुनिशिव मुसुकाई । बैठन कहि सबकथा बुझाई
पूछाप्रभु नव शिवकर जोरी । नाथमुनहुयह बिनतीमोरी
कह अपराधकीन्हमुनिभारी । सो अबमोसन कहहुबिचारी
तब प्रभुकही सुनहुहो मोरा । यह कन्या सेवक ह्वै मोरा
सुनहु हियधरिके मुनिज्ञाना । किए कुदृष्टि कुधर्म न जाना
कारणसोई श्रापतब दयऊ । ताते अंग बरन मुनिभयऊ
इतनाकहिमुनिमन मुसकाने । ज्ञानहीन तब मुनिपहिचाने
बैनसुनतप्रभुक्रोधित भयऊ । कन्या संगलै मुनिपहगयऊ

दो०—बचन सुनत क्रोधित भये, क्रोध न हिये समाय ।
कौतुक कीन्ह अयुक्त तुम, मोसन कहहु बुझाय ॥

जोरि पानिमुनिबचनसुहाए । धरिपद कमलसूर्य गुनगाये
कहमुनिसुनुप्रभुबचनहमारी । भा मोसन अपराधहिं भारी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

यह अपराध क्षमाप्रभु कीजै । दीनानाथ अनुग्रह कीजै
तब प्रभुकहासुनो मम बानी । उतके लोग सकलअगानी
तेहि अपराध लेहुमुनिशापा । जैसे कीन्हेउ तसभोगहुपापा

दो०—त्रिभुवन स्वामी मोपर, करहु ज्योति परकाश ।
हर्षित गावहिं गुन बिमल जहा मोर भवबास ॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्यमहात्म्य ।वमो अध्याय ॥ ५ ॥

पंपापुरएक नगर को नाऊं । हलधर बिप्र तहां कर राऊं
नगर बसै मानो कैलासा । धर्म कथा तहाँ होई प्रकाशा
पूजन करै भानु दिनराती । निस दिन टेकधरे बहुभांती
कोटि अग्निचारिहुदिशिमाहीं । श्रीसूर्य्य को आश्रम ताहीं
रतन जड़ित सरतहां सुहावा । कनक घाटचहुं ओरबनावा
तहां खम्भएक परमबिशाला । शत योजन सो उच्चरसाला
तेहिखम्भ आदित कर बासा । प्रात खम्भसो लागअकाशा
जोजन लक्षसो उदय कराहीं । जाजनसहस एकपलजाहीं
प्रात होत उदया चल पासा । अस्ताचलकरकराहिंनिवासा
यहिबिधिआदित आवहिंजाहीं। समुझ पुनीतकथामनमाहीं
आदित कथा सुनु मनलाई । मैंतोहिं अर्थ कहौं समुझाई

दो०—धन्य भानुईश्वर प्रभु, महिमा अगम अपार ।
तीनलोक छाव ज्योति मय, है जाकर उजियार ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कुष्टा ध्यावे भक्ति कर, पावकाया दान ।
अन्तर्यामी दयानिधि, कृपा कराह भगवान ॥
सुरनर मुनि अस्तुति कराँहि, हित्ते प्रशन्न भगवान ।
जोहित मन व्रत नरकर, श्रद्धा प्रीति समान ॥
सबगुण आगर बुद्धिबर, सुन्दर शील निधान ।
मनबच क्रमते हर्षयुत, जोनर कराँह बखान ॥
इति श्रीममापुराणे सूर्य्य महात्मय्ये षष्टमों अध्यायः ॥६॥

गिरिजाकह्योसोकहौ गोसांई । सोमोहिं अर्थ कहौ समुझाई
कहनलगे शिवकथा रसाला । जेहिबिधिउगहिं पूर्बकृपाला
गिरिजा सुनोकथा मनलाई । मैंतोहि अर्थ कहौ समुझाई
पूर्वदिशा एक श्रीपुर देशा । तहां के राजा भूप महेशा
करै सदा आदित की पूजा । सेवै सूर्य्य और नहिं दूजा
यहिबिधिसकलनगरउजियारा। तहां एक है अगम पहारा
सहस कोस परबत परमाना । बसै तहां आदित बलवाना
उभैजाय तहांकरै निवासा ।पुनिपश्चिमदिशिकरहिंप्रकासा
मन बचक्रम कथा बरणाई । सूर्य्यचरितबिधि तुमहिंसुनाई
सुनिगिरिजासुन्दर यहबानी । बल प्रतापसुनिमन हरखानी
धन्यभानु जिनकीयहलीला । धर्म धुरंधर परम सुशीला
जोनर कथा सूर्य्यकी गावै । चढ़ि बिमान बैकुंठ सिधावै

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सूर्यचरित मुनिअमृतबानी। अस्तुति हर्षित करै भवानी
छं०-हैजब स्वामी अन्तर्यामी ज्योति कलाछबि उदितमहा
गुननीत निधाना श्रीभगवाना करौ कृपा मोहि धर्म महा
छबि ज्योति बिराजै कुंडलराजै तब प्रताप महिमा बरना
तब हे घनेरा सब प्रभु तेरा लेत नाम पातक हरना॥

दो०—करहु कृपा मोहिपर, अति छबि जोति विराज।
तेज बिपुल तिहुँलोक महँ, जयजयजय महराज॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्य महात्मये पूर्वदिश उदय बर्णानोनामः॥७॥

उत्तरदिशि कहउमागिगोसांई। मैंतोहिं अर्थ कहौं समुझाई
उत्तरदिशि एकनगरबिशाला। राजकरै तहँमदन गोपाला
तहाशैल एकपरम बिशाला। सतयोजन परमान कराला
तापर भानु किरननहिं पावैं। यहिबिधिपुर अंधियारजनावै
निशा जोरसबपुर अंधियारा। उगे न रवि नहोई उजियारा
तहाँ बास कलियुगकर होई। पाप मलेछ बसत तहँ सोई
यह कारन तहँ उगेन भानू। मैंतोहिं अर्थ कहौं परमानू
एकसमयअतिअचरज भयऊ। नारदमुनितहवां चलिगयऊ
देखानगर सकल अंधियारा। धर्म कथा कर कहूं न चारा
फिरि२सकलनगर मुनिदेखा। अघ व्यवहारअवर नहिंदेखा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मनमहँ नारद कीन्हबिचारा । कह आये यहपूर अंधियारा
असकहिनारद कोपेउजबहीं । दीन्हा श्राप नगर कहँतबहीं
कुष्टी होउ सकल नरनारी । धर्म कथाकर नाम बिसारी
कुष्ट बरन भा सबके अंगा । आठो गात कुष्ट तनभंगा
रहान कोउ कुष्ट बिहीना । जबहीं श्राप मुनिश्वरदीना
ब्याकुल भये सकल नरनारी । त्राहि २ सब करहि पुकारी
श्राप देई उत्तर कह आए । अबहमयहमुनिचारितसुनाए
अब कहहु मुनि पूछोतोहीं । उग्र श्राप कब होई वोहीं
अंग बरन मुनि देखा कैसा । हँस समान स्वेत भा जैसा
बिदा होई मुनि घरकहँआये । हरखित होई भानुगुन गाये
धानि आदित कायाके राजा ज्योतिष जासुति हूलोकाबिराजा
अस्तुति रविकर नारद गाये । कोटि बिप्र तब नेवत पठाये
भोजन सुधा समान बनाये । प्रेमसहित सब बिप्र जेवाये
अश्वमेधमुनिकरनसो लागे । तीनलोक के दारिद भागे
सब कह नारद नेवत पठाये । निज २ बाहन चाढि २ आये
ब्रह्मा बिष्णु और त्रिपुरारी । आये सबै सहित सुतनारी
बहुप्रकार मुनिसबहिं जेवाये । हरखित होई भानुगुन गाये
बेद पढै मुनि गिरा सुधारी । हरखित गावहिं मंगल नारी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चंदन अक्षत लै पकवाना । पूजा करहिं मुनी धरिध्याना
ब्रह्मादिक निजलोक सिधाये । प्रेम पुलक सूरज गुनगाये

दो०—यज्ञ कीन्ह मुनी बरस विधि शोभा बरनि न जाय।
देव कोटि तेतीस तहं हरखि भानु गुन गाय॥

इति श्री महापुराणे नारद यज्ञ वर्णनो नाम अष्टमोध्यायः॥ ८॥

जोनर धरे सूर्य्य पर ध्याना । ताकर होई पुत्र कल्याना
जो रवि कथा सुनै मनलाई । तापर दिनकर होई सहाई
धर्म प्रतापआदितबलवाना । तेज प्रतापी अग्निसमाना
गिरिजाशंभु सुनशैलकुमारी । कहौं भानु चरित विस्तारी
कहनलगे शिव कथारसाला । जेहिबिधिदक्षिणउगहिंकृपाला
रनन करहि अर्थ समुझाई । सुनहु सत्यागिरिजामनलाई
दक्षिणादिशिएक नगरअनूपा । जयमरु विप्र तहांकरभूपा
हर्षित भजन करै दिनराती । तहांकरै प्रभु सुखबहुभांती
यहिबिधिप्रभुकीज्योतिबिराजै।अनहनदानघट धुनि बाजे
तैंतिस कोटि देवता जहवां । श्री सूर्य्यके आश्रम तहवां
दक्षिण दिशि काशी प्रयागा । तहांकेलोगसकलबड़भागा
दोउ बलभद्र सहोदर संगा । तहां बसै सरितावर गंगा
कृपासिंधु प्रभु परम अगाधा॥निशिदिनसुमिरतनाथअबाधा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दो०--दक्षिण दिशा पुनीत है, सुनहु उमा मनलाई।
प्रथम अर्थ जैसे अह तैसे कहो बुझाई॥

कलिबितीति जबहिं होजैहैं। मानुष को मानुष धरिखैहै
तब प्रभुधरि अवतारकलंकी। मानुष तन हो जैहै पंखी
तब दक्षिणदिशि उदै कराहीं। आगिल अर्थकहोतुमपाहीं
धर्मकथा होइहै दिन राती। नेम धरम करिहै बहु भांती
विप्र जेमाय के होम करावै। वोही भस्म लै अंग लगावै
बिप्र जेमाय आप तब खैहै। निसिदिनकथा सूर्य्यकीगैहै
यहप्रातिकमलाकरहिनिवासा। धर्म कथाकर होई प्रकाशा
मिथ्या बचन कोउना माषै। धर्म बिचार मानु तप र.खै

दो०--द्वादस कला उगिहैं तबहिं, आदि अंत तब आई।
पूर्व जन्मके सकल अघ, कहत सुनत अक्षय जाई॥

इति श्री महापुराणे सूर्य्य महात्म्ये कलिवर्णनोनाम नवमोध्यायः॥ ९

बोली तबही उमा हरषाई। दया करो कछुकहो गुसाईं
जेहि सेवाकरि नर सुखपावै। जाहिभजे शुभगति नरपावै
रवि महिमा अति अगम अपारा। कहियेनाथ कथा बिस्तारा
जाको भक्तिमिलैसब घानी। सोप्रसंग सब कइहुबखानी
अतिउत्तमजसरविअवगाहा। सोप्रभु बरनो सहित उछाहा
कसस्वरूपकिमिरूपहिकरहिं। किमिशीतलकिमितेजहिंधरहिं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कहि प्रति मासन उदै गोसाई । किमि व्रत करि नर मोक्षहि जाई
सोई सत्य सब कहौ विचारी । जेहि मुनि होइ ज्ञान अधिकारी
अस कहि शिव पद बंदन कीन्हा । हरषि शंभु हरि सुमिरन कीन्हा

दोहा-धन्य धन्य गिरिजा सुनहु, पुछहु जगहित लाग ।
रवि चरित्र पावन परम, सुनहु चरित अनुराग ॥

रवि मंडलकर सुन बिस्तारा । जेहि विधि तन स्थूल अपारा
द्वादस सहस योजन चहुं फेरा । रवि मंडल जानहु शुभ डेरा
अति उत्तम जगतेज अपारा । गये समीप न होय उबारा
दस सहस रवि नयन गनाये । अति विशाल कहि देव गनाये
उदै होत त्रिभुवन तम भागे । तासन हम निज नित वर मांगे
पर ब्रह्म साक्षी नहिं जानै । सुमित हिय ध्यान उर आने
उदय होत विधि रूपहिं जानों । मध्य बिष्णु को रूप बखानों
सन्ध्या रूप रुद्र गति केरी । तीन काल तब मुरति टेरी
यह अनुमान सदा पद बंदिये । निश्चै करि बिश्वास अनंदिये
पावहिं गति ते नर बड़भागी । जाके कमल चरन लौ लागी

दो०-यहि बिधि तो जानेउँ उमा, रवि पूजा जेहि हेतु ।
सिद्ध तासु मन कामना, चारि पदारथ देत ॥

और सुनहु प्रभु की प्रभुताई । सूर्य कथा सब बेदन गाई

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

द्वादस तनधरि वेद बखाने। द्वादसकथा उद्योत बिधाने
द्वादस मासके द्वादस नामा। उदै करै रबि जग सुखधामा
माघमास मासन महँ नीका। कहश्रुतिसब मासनकरटीका
मकर उदयकहिबरुनसुनामा। सुमिरत ताहिहोइ मनकामा
फागुन कुम्भमकर शुभनामा। भक्ति ज्ञान ध्यानकर जामा
चैत मीन रबि उदय कराहीं। नाम देव जग जानै ताहीं
माघहिं मेष भानु तप होई। उच्च नाम रबि करिहैं सोई

दो०-इन्द्रनाम वृष ज्येष्ट तप, सब प्रकार सुख देहिं।
रबि अषाढ तपकर मिथुन, तासु नाम जप लेहिं॥

सावन करके नाम रबिकेरी। भादों सिंह भवनकी फेरी
आश्विन कन्या राशिविराजै। सुवरन रेत नाम शुभछाजै
कातिकतुलादिवाकर नामा। उदयकरहिंरविजगसुखधामा
मार्ग शीर्ष वृश्चिकहिं सुहाई। मित्रनाम सबजग सुखपाई
पूसमास धन राशि गनाये। बिष्णु सनातननाम कहाये
यहिविधिद्वादशमासनामहीं। मास मास प्रतिउदय कराहीं
औरो वेद कहैं अस वानी। मास मास प्रतिउदयभवानी

दोहा-सुनो उमा यह सकल व्रत, दिनकर याहि बिधान।
याहि कर कुमारि. मिल, गावैं वेद पुरान॥

इति श्री महापुराणे सूर्य्यमाहात्म्ये दशमोऽध्याय॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मनस्थिरकर सुनुशैलकुमारी । व्रत निधान कहौं विस्तारी
शनिवार लघु भोजन कीजै । अरु आदितवार धरमकीजै
दंतकाष्ट पहिले कर लीजै । तब अस्नानहिं चित्तहिंदीजै
उदय होत रवि अंजुलीदेई । सात प्रदक्षिणा करिये सेई
तब धोती अरु मलउपरना । होमकर पढ़िमंत्र सपरना
बांदि दंडवत रविकहँ करई । दृढ बिश्वास चित्त महँ धरई
अगहनतेयहव्रतहिबखानों । ताकर बिधिताकरिसबआनो
अगहनमेंतुलसीदलखंडित । व्रत करै सूक्ष्मते पंडित
पूसमास गोघृत पल तीना । अति पुनीतकाया करदीना

दो० – माघ मास व्रत जो करै, मुष्टि तिन तिलखाय ।
व्रत निधान जो करहिं नर ऋषि लोकहिते जाय ॥

फागुन मास बरत सुखदाई । क्षीर तीन फल भोजनखाई
चैतमास करसुनहु बिधाना । दहीतीनपलअधिकनआना
बैसाख गोघृत गोबर आना । तीन पलतेअधिकनआना
जेष्ट मास करमाबावि बादी । तीन अंजुली जलअभ्यादी
मास असाढ बरत कष्टधरई । तीन मीरिच औलबनकरई
सावन मास बरत रविनीका । खांड़ तीन पहले सबहीका
भादोमास अमित सुखदाई । त्रैअंगुल गोमूत्रहिं खाई

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

आश्विन मासबरतशुभजाने । फलकेदली केतीन बखाने
कातिक मास बरत जोकरई । त्रैफल हव्य आनिके चरई

दो० —यहि बिधि बारह मास लगि, ब्रतबिधान कीन ।
रवि पूजा बिधिवत सहित, मुनि दुर्लभ सो दीन ॥
तुम सम सुब्रत बिचारि नित, सत्य सो प्रगटे आई ।
अब जो कछु कहिहौं उमा, सो बरनो हरषाई ॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्यब्रतवर्णनो नामयग्यारहयोध्यायः ।

सो सुनिउमाहर्ष अति भई । माया मोह व्यथासब गई
धन्य २ सुनु शंकर स्वामी । कथाकह्योनिजहरखितगामी
जे कर्ता रवि पूजन लोगा । करहिअनन्दमिटहिंसबरोगी
कथा और कछु कहें गुसांई । सो तुम अब करौ सहाई

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्य महात्मये उग्नामहेश्वर संबादे सूर्य्य कथा वर्णनोनाम द्वादशोध्यायः॥ १२ ॥

मिलने का पता —

माधव प्रसाद बुकसेलर

राजमन्दिर बनारस सिटी ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सूचीपत्र

हिन्दी की पहिली	)॥	रामायण बड़ा सटीक	७)
दूसरी पुस्तक	-)	तथा मध्यम	४)
तीसरी पुस्तक	-)॥	तथा गुटका	२।
चौथी पुस्तक	=)	रामायण मूल बड़ा	२॥)
हिन्दी अंग्रेजी प्र०	=)	तथा मध्यम	१)
तथा दूसरा भाग	≡)	गुटका १६ पेजी	।)
भजन रत्नाकर	-)	गुटका ३२ पेजी	॥=)
भजन प्रभाती	-)	सुन्दर कांड	=)
भजन रामायण	-)	किंसिकिन्धा कांड	-)
भजन रत्नावली	।)	बाल कांड	॥)
आनन्द सागर	≡)	अयोध्याकाड	।=)
हनूमान चालीसा		लंकाकांड	।)
हनुमान अष्टक	)॥	उत्तरकांड	।)
दानलीला नाग लीला	)॥	हातमताई	॥)
हनुमान बाहुक	-)	चहार दरवेश	।=)
बजरंगबाण	)॥	गुलबकावली	।)
विनपत्रिकामू	।=)	सिंहासन बतीसी	=)
तथा सटीक ॥।)	२)	बेताल पंचीसी	=)

मिलने का पता—

बेनीराम बुकसेलर

शिवाला बनारस सिटी।